दिनांक 25 मार्च, 2023 को यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, मेघालय (USTM) के सौजन्य में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित "नेशनल कान्फ्रेंस ऑफ वाइस चांसलर्स- 2023 के समापन समारोह में असम के माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी अभिभाषण

भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कुलपति सम्मेलन के इस मंच पर आसीन,
मेघालय सरकार में शिक्षामंत्री श्री आर.ए. संगमा जी,

असम सरकार में शिक्षा सलाहकार प्रो. ननी गोपाल महन्त जी,

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी जी,

भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष जादवपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सुरंजन दास जी,

महासचिव डॉ. पंकज मित्तल जी,

और इस कार्यक्रम के आतिथेय विश्वविद्यालय "विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय, मेघालय" के कुलाधिपति महबबुल हक जी,
कुलपति प्रोफेसर जीडी शर्मा जी,
एवं उपस्थित देवियों और सज्जनों,

आज भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित आदरणीय कुलपतियों के राष्ट्रीय सम्मेलन के इस कार्यक्रम में आपके बीच आने का अवसर मिला, इसके लिए मैं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के पदाधिकारियों और स्थानीय आयोजक विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय मेघालय के चांसलर का आभारी हूं।

मुझे बताया गया कि भारतीय विश्वविद्यालय संघ से लगभग 934 विश्वविद्यालय संबद्ध हैं, जिसमें 15 विदेश के विश्वविद्यालय हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि के रूप

में यह भारतीय विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग और समन्वय को सुगम करता है और विश्वविद्यालय और सरकार केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के बीच संपर्क का भी काम करता है।
इस आयोजन का दायित्व विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय मेघालय ने लिया है, जो पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है, जिसे नेक संस्था ने "ए" ग्रेड प्रदान किया है।

मुझे यह भी बताया गया है कि इस विश्वविद्यालय में 6,500 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिसमें 90% ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं और 43% पर्वतीय क्षेत्र से। इनमें लगभग 60% बालिकाएं हैं। यह विश्वविद्यालय 20% गरीब छात्रों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करता है। साथ ही यह अपने अन्य संस्थानों के माध्यम से भी पूर्वोत्तर क्षेत्र में युवाओं को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है, जो सराहनीय है।

मित्रों,
मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 400 से अधिक आदरणीय कुलपतियों ने उद्घाटन सत्र से लेकर अलग-अलग सत्रों में भारतीय भाषाओं के विकास, विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों के विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग, उच्च शिक्षा के संस्थानों के आदर्श स्वरूप और उनकी स्वायत्तता, आत्मनिर्भरता हेतु सरकार के कम से कम हस्तक्षेप, समग्र सर्वांगीण शिक्षा के लिए शैक्षिक सुधार, शोध और उत्कृष्टता की दृष्टि से सकारात्मक वातावरण निर्माण और शिक्षा को भविष्य के प्रति उन्मुख बनाने आदि विषयों पर पिछले तीन दिनों में गहन चिंतन-मनन किया है।
मित्रों,
आज हमारे पास नई शिक्षा नीति है जो भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में, मार्गदर्शक का काम कर रही है। यह भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाने के लिए भी भारतीय विश्वविद्यालयों का निरंतर मार्गदर्शन कर रही है। मुझे यह जानकर और खुशी हुई कि इस राष्ट्रीय सम्मेलन का विषय भी नई शिक्षा नीति के अनुरूप ही रखा गया है—

Transformative Higher Education for ATMANIRBHAR BHARAT" यानी "आत्मनिर्भर भारत के लिए परिवर्तनकारी उच्च शिक्षा"।

मित्रों,
हमने आजादी के इस अमृत काल में भारत को एक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा है। हमारा जितना बड़ा लक्ष्य है, उतना ही अधिक परिश्रम और समर्पण की जरूरत भी है। हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में हमारी नई शिक्षा नीति का अहम योगदान होगा। क्योंकि हमारी नई शिक्षा नीति सैद्धांतिक और प्रायोगिक दोनों दृष्टि से सटीक है।

भारत युवाओं का देश है। युवाओं की नैसर्गिक प्रतिभा को Skills Development के माध्यम से आधुनिक भारत के निर्माण की प्रक्रिया में और अधिक व्यापकता के साथ जोड़ने की आवश्यकता है।

□□ □□ हमारे समसामयिक □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ कि भारत का □□□□ शिक्षा □□□□□ अमेरिका, चीन के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उच्च शिक्षा तंत्र है। विगत 50 वर्षों में देश के विश्वविद्यालय की संख्या में 11.6 गुना, महाविद्यालयों में 12.5 गुना, विद्यार्थियों की संख्या में 60 गुना और शिक्षकों की संख्या में 25 गुना वृद्धि हुई है। फिर भी उच्च शिक्षा की सुलभता का सपना अभी भी पूरी तरह साकार नहीं हो पाया है। आप सभी विद्वत्जनों ने सम्मेलन के दौरान उच्च शिक्षा के संदर्भ में गहराई से चिंतन-मनन किया है। मेरे भी कुछ विचार हैं जिन्हें आपके समक्ष रखना चाहता हूँ –

1. विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अनुसंधान व प्रसार की गतिविधियां बढ़ें ताकि विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय बन कर खड़े हो। हमारे वैज्ञानिक व विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान करके उनके परिणामों को अंतरराष्ट्रीय स्तर के शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाएं व नई तकनीकी विकसित करते हुए उनका पेटेंट करवायें।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

3. विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों की पुनर्रचना हो जिससे भारत ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिले ।

4. पाठ्यक्रम में कौशल शिक्षा व मूल्य शिक्षा का समावेश हो ।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत विश्वविद्यालय बहु विषयक हो।

6. बहु विषयक स्नातक शिक्षा हो। विश्वविद्यालयों को अन्य विश्वविद्यालयों को स्थापित करने व सहयोग देने में सक्रिय भूमिका का निर्वहन हो ।

7. सन 2030 तक प्रत्येक जिले में या उसके निकट एक उच्चतर शिक्षा संस्थान स्थापित करने में विश्वविद्यालय अपनी भूमिका निभाए।

8. विश्वविद्यालयों में प्रभावी प्रशासन व नेतृत्व का काम कुलपति के पद पर आसीन व्यक्ति का हो।

9. डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित कर वर्चुअल प्रयोगशाला व ऑनलाइन शिक्षण मंच एवं ऑनलाइन परीक्षाएं तथा मूल्यांकन की दिशा में गंभीर प्रयत्न हो।

10. विश्वविद्यालयों में शिक्षण का माध्यम स्थानीय / भारतीय भाषा या दो भाषाओं में करने के लिए विशेष प्रयत्न हो।

11. नई शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय करण के बारे में रणनीति बनाकर विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू करते हुए स्टूडेंट व फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम भी आवश्यक हो।

12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित एकेडमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट की योजना प्रभावी एवं समयबद्ध ढंग से लागू हो।

हमें यह ध्यान रखना है कि किस प्रकार से हम अपनी युवापीढ़ी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकें। कैसे उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना और भर सकें। वस्तुतः शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक दृष्टि से पूर्णता के साथ, मानवता के लिए संवेदनशील तथा

सुसंस्कृत समाज के निर्माण के लिए समर्पित युवापीढ़ी का निर्माण करना है। "वसुधैव कुटुंबकम्" के आदर्श को लेकर ही भारत पुनः "विश्व गुरु" बनने की दिशा में सामर्थ्यवान हो सकेगा।

मुझे विश्वास है कि भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अधीन भारतीय विश्वविद्यालय और पूर्वोत्तर क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे "विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय मेघालय" निश्चित रूप से भारतीय जीवन पद्धति के अनुरूप संस्कारित युवापीढ़ी का निर्माण करने में सक्षम होंगे। भारत के उच्च शिक्षा संस्थान अपने साझा प्रयासों के माध्यम से भारत को एक विकसित, सशक्त राष्ट्र बनाने में माध्यम का रोल निभा सकेंगे।

मैं पुनः भारतीय विश्वविद्यालय संघ के पदाधिकारियों एवं विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय के चांसलर के प्रति आभार व्यक्त करता हूं कि आपने विद्वत जन की इस सभा में मुझे उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया।

आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय हिंद !